कमला नेहरू महिला महाविद्यालय ; भुबनेश्वर

हिंदी विभाग ; ई – पत्रिका

हिंदी भारती

नववर्ष की

हार्दिक शुभकामनाएं

जनवरी, फरवरी – 2020

संपादक मंडली

संपादक : डॉ. वेदुला रामालक्ष्मी

डॉ. मनोरमा मिश्रा

उप – संपादक : कु. हाफिज़ा बेगम

कु. बर्षा प्रियदर्शिनी

कु. बांगी हंसदा

संपादकीय

'हिंदी भारती' की ओर से सभी पाठकों को नववर्ष की हार्दिक शुभकामनायें।

लंबे अंतराल के बाद एक बार फिर 'हिंदी भारती' आपके समक्ष प्रस्तुत है। 'हिंदी भारती' का यह अंक नवीन संकल्पों, नवीन उत्साह, नवीन सपनों तथा जीवन की नवीन तरंगों को समर्पित है। हमारी ई - पत्रिका अब एक बहुत बड़े परिवर्तन के दौर से गुजर रही है। जिन छात्राओं को ले कर यह पत्रिका शुरु हुई थी, अब वे छात्रायें महाविद्यालय की शिक्षा समाप्त कर जीवन के बड़े लक्ष्य की ओर जाने की राह पकड़ चुकी हैं। नई छात्रायें आ चुकी हैं। 'हिंदी भारती' का स्वरूप बदल रहा है। हम 'हिंदी भारती' के स्तर को ऊँचा उठाना चाहते हैं, हम चाहते हैं कि विभाग की छात्रायें इस ओर अपना समय दें और स्तरीय लेख लिखें तथा साथ ही संपादन की कला भी सीखें। अतः हमने यह निर्णय लिया है कि 'हिंदी भारती' द्वैमासिक पत्रिका बने। आशा है आप हमारा साथ इसी तरह देते रहेंगे और अपनी बात हम तक पहुँचाते रहेंगे। "आपकी बात" हमारे लिये अखण्ड प्रेरणा का स्रोत है। कृपया अपनी बात हम तक पहुँचाते रहें। हम आशा करते हैं कि हर अंक की तरह आप इस अंक को भी स्वीकार करते हुए भविष्य में हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे और आपका आदर और स्नेह हमें इसी तरह मिलता रहेगा। अब हमारी पत्रिका आप हमारे महाविद्यालय के वेब साइट www.knwcbbsr.com पर भी पढ़ सकते हैं।

संपादक : डॉ. वेदुला रामालक्ष्मी

डॉ. मनोरमा मिश्रा

अनुक्रमणिका

क्र सं.	शीर्षक	विधा	नाम	पृ.स .
1.	नववर्ष	लेख	संग्रहित	5
2.	मेरे आम का पेड़	कहानी	सस्मिता मोहंती	9
3.	एक बूंद	कहानी	श्राबणी	10
4.	श्री रामचरितमानस में करुण रस	लेख	कबिता प्रधान	11
5.	कालीदास	लेख	शरीफा शरवारी	14
6.	भोर का तारा - शेखर	लेख	हाफिज़ा	16
7.	ललित कुमार	लेखक परिचय	संगृहित	17
8.	चुनाव	कहानी	पिंकी सिंह	19
9.	अब तो दर्शन दे दो माँ	कविता	बांगी हंसदा	22
10.	आ गई माता रानी आ गई	कविता	संगीता प्रधान	22
11.	राजनीतिक भ्रष्टाचार - जुलूस	लेख	शरीफा शरवरी	23
12.	नारी	लेख	श्राबणी	24
13.	कन्यादान	कविता	शरीफा शरवरी	25
14.	गीताश्री	लेखक परिचय	संगृहित	26
15.	औरंगज़ेब की आखिरी रात	लेख	प्रज्ञा	27
16.	मल्लिका	लेख	मामानी रेड्डी	29
17.	तअपोई	लेख	पुष्पा साहू	32
18.	समय	लेख	सस्मिता नायक	33
19.	कुछ अल्प विराम	पुस्तक समीक्षा	हाफिज़ा	34
20.	आपकी बात			35
21.	बाबा नागार्जुन	यू ट्यूब लिंक		36
22.	यादों के गलियारों से	चित्र स्मृतियाँ	यादों के गलियारों से	37

नववर्ष

ऐसा माना जाता है कि नया साल आज से लगभग 4,000 वर्ष पहले बेबीलोन नामक स्थान पर मनाया गया था। 1 जनवरी को मनाया जाने वाला नया वर्ष दरअसल, ग्रेगोरियन कैलेंडर पर आधारित है। इसकी शुरुआत रोमन कैलेंडर से हुई है। इस पारंपरिक रोमन कैलेंडर का नया वर्ष 1 मार्च से शुरू होता है, लेकिन रोमन के प्रसिद्ध सम्राट जूलियस सीजर ने 46 वर्ष ईसा पूर्व में इस कैलेंडर में परिवर्तन किया था। इसमें उन्होंने जुलाई का महीना और इसके बाद अपने भतीजे के नाम पर अगस्त का महीना जोड़ दिया। दुनियाभर में तब से लेकर आज तक नया साल 1 जनवरी को मनाया जाता है।

भारत में नया साल विभिन्न स्थानों पर अलग-अलग तिथियों पर मनाया जाता है। ज्यादातर ये तिथियां मार्च और अप्रैल के महीने में पड़ती हैं। पंजाब में नया साल बैसाखी के रूप में 13 अप्रैल को मनाया जाता है। सिख धर्म को मानने वाले इसे नानकशाही कैलेंडर के अनुसार मार्च में होली के दूसरे दिन मनाते हैं। जैन धर्म के लोग नववर्ष को दिवाली के अगले दिन मनाते हैं। यह भगवान महावीर स्वामी की मोक्ष प्राप्ति के अगले दिन से शुरू होता है।

ग्रंथों में लिखा है कि जिस दिन सृष्टि का चक्र प्रथम बार विधाता ने प्रवर्तित किया, उस दिन चैत्र शुदी प्रतिपदा रविवार था। हिन्दू नववर्ष अंग्रेजी माह के मार्च - अप्रैल में पड़ता है। इसी कारण भारत मे सभी शासकीय और अशासकीय कार्य तथा वित्त वर्ष भी अप्रैल (चैत्र) मास से प्रारम्भ होता है।

चैत्र के महीने के शुक्ल पक्ष की प्रथम तिथि (प्रतिपद या प्रतिपदा) को सृष्टि का आरंभ हुआ था। हमारा नववर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को शुरू होता है। इस दिन ग्रह और नक्षत्रों के चलन में परिवर्तन होता है। हिन्दू नववर्ष की शुरूआत इसी दिन से होती है।

पेड़-पोधों मे फूल, मंजर, कली इसी समय आना शुरू होते हैं, वातावरण मे एक नया उल्लास होता है जो मन को आह्लादित कर देता है। जीवों में धर्म के प्रति आस्था बढ़ जाती है। इसी दिन ब्रह्मा जी ने सृष्टि का निर्माण किया था। भगवान विष्णु जी का प्रथम अवतार भी इसी दिन हुआ था। बसंत नवरात्र की शुरुआत इसी दिन से होती है। जिसमें लोग उपवास एवं पवित्र रह कर नव वर्ष की शुरूआत करते हैं।

परम पुरूष अपनी प्रकृति से मिलने जब आता है तो सदा चैत्र में ही आता है। इसीलिए सारी सृष्टि सबसे ज्यादा चैत्र में ही महक रही होती है। वैष्णव दर्शन में चैत्र मास भगवान नारायण का ही रूप है। चैत्र का आध्यात्मिक स्वरूप इतना उन्नत है कि इसने वैकुंठ में बसने वाले ईश्वर को भी धरती पर उतार दिया।

न शीत न ग्रीष्म। पूरा पावन काल। ऎसे समय में सूर्य की चमकती किरणों की साक्षी में चरित्र और धर्म धरती पर स्वयं श्रीराम रूप धारण कर उतर आए, श्रीराम का अवतार चैत्र शुक्ल नवमी को होता है। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा तिथि के ठीक नवे दिन भगवान श्रीराम का जन्म हुआ था। आर्यसमाज की स्थापना इसी दिन हुई थी। यह दिन कल्प, सृष्टि, युगादि का प्रारंभिक दिन है। संसारव्यापी निर्मलता और कोमलता के बीच प्रकट होता है हमारा अपना नया साल विक्रम संवत्सर, विक्रम संवत का संबंध हमारे कालचक्र से ही नहीं, बल्कि हमारे सुदीर्घ साहित्य और जीवन जीने की विविधता से भी है।

कहीं धूल-धक्कड़ नहीं, कुत्सित कीच नहीं, बाहर-भीतर जमीन-आसमान सर्वत्र स्नानोपरांत मन जैसी शुद्धता। पता नहीं किस महामना ऋषि ने चैत्र के इस दिव्य भाव को समझा होगा और किसान को सबसे ज्यादा सुहाती इस चैत में ही काल गणना की शुरूआत मानी होगी।

चैत्र मास का वैदिक नाम है-मधु मास। मधु मास अर्थात आनंद बांटती वसंत का मास। यह वसंत आ तो जाता है फाल्गुन में ही, पर पूरी तरह से व्यक्त होता है चैत्र में। सारी वनस्पति और सृष्टि प्रस्फुटित होती है, पके मीठे अन्न के दानों में, आम की मन को लुभाती खुशबू में, गणगौर पूजती कन्याओं और सुहागिन नारियों के हाथ की हरी-हरी दूब में तथा वसंतदूत कोयल की गूंजती स्वर लहरी में।

चारों ओर पकी फसल का दर्शन, आत्मबल और उत्साह को जन्म देता है। खेतों में हलचल, फसलों की कटाई, हंसिए का मंगलमय खर-खर करता स्वर और खेतों में डांट-डपट-मजाक करती आवाजें। जरा दृष्टि फैलाइए, भारत के आभा मंडल के चारों ओर। चैत्र क्या आया मानो खेतों में हंसी-खुशी की रौनक छा गई।

नई फसल घर मे आने का समय भी यही है। इस समय प्रकृति मे उष्णता बढ्ने लगती है, जिससे पेड़ - पौधे, जीव-जन्तु मे नव जीवन आ जाता है। लोग इतने मदमस्त हो जाते है कि आनंद में मंगलमय गीत गुनगुनाने लगते है। गौर और गणेश कि पूजा भी इसी दिन से तीन दिन तक राजस्थान मे कि जाती है। चैत शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा के दिन सूर्योदय के समय जो वार होता है वह ही वर्ष में संवत्सर का राजा कहा जाता है, मेषार्क प्रवेश के दिन जो वार होता है वही संवत्सर का मंत्री होता है इस दिन सूर्य मेष राशि मे होता है।

भारतीय नव वर्ष

भारत के विभिन्न हिस्सों में नव वर्ष अलग-अलग तिथियों को मनाया जाता है। प्रायः ये तिथि मार्च और अप्रैल के महीने में पड़ती है। पंजाब में नया साल बैशाखी नाम से 13 अप्रैल को मनाई जाती है। सिख नानकशाही कैलंडर के अनुसार 14 मार्च होला मोहल्ला नया साल होता है। इसी तिथि के आसपास बंगाली तथा तमिळ नव वर्ष भी आता है। तेलगु नया साल मार्च-अप्रैल के बीच आता है। आंध्रप्रदेश में इसे उगादी (युगादि=युग+आदि का

अपभ्रंश) के रूप में मनाते हैं। यह चैत्र महीने का पहला दिन होता है। तमिल नया साल विशु 13 या 14 अप्रैल को तमिलनाडु और केरल में मनाया जाता है। तमिलनाडु में पोंगल 15 जनवरी को नए साल के रूप में आधिकारिक तौर पर भी मनाया जाता है। कश्मीरी कैलेंडर **नवरेह** 19 मार्च को होता है। महाराष्ट्र में **गुड़ी पड़वा** के रूप में मार्च-अप्रैल के महीने में मनाया जाता है, कन्नड नया वर्ष उगाडी कर्नाटक के लोग चैत्र माह के पहले दिन को मनाते हैं, सिंधी उत्सव चेटी चंड, उगाड़ी और गुड़ी पड़वा एक ही दिन मनाया जाता है। मदुरै में चित्रैय महीने में **चित्रैय तिरूविजा** नए साल के रूप में मनाया जाता है। मारवाड़ी नया साल दीपावली के दिन होता है। गुजराती नया साल दीपावली के दूसरे दिन होता है। इस दिन जैन धर्म का नववर्ष भी होता है।लेकिन यह व्यापक नहीं है। अक्टूबर या नवंबर में आती है। बंगाली नया साल पोहेला बैसाखी 14 या 15 अप्रैल को आता है। पश्चिम बंगाल और बांग्लादेश में इसी दिन नया साल होता है।

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का ऐतिहासिक महत्व :

1) इसी दिन के सूर्योदय से ब्रह्माजी ने सृष्टि की रचना प्रारंभ की।

2) सम्राट विक्रमादित्य ने इसी दिन राज्य स्थापित किया। इन्हीं के नाम पर विक्रमी संवत् का पहला दिन प्रारंभ होता है।

3) प्रभु श्री राम के राज्याभिषेक का दिन यही है।

4) शक्ति और भक्ति के नौ दिन अर्थात् नवरात्र का पहला दिन यही है।

5) सिखो के द्वितीय गुरू श्री अंगद देव जी का जन्म दिवस है।

6) स्वामी दयानंद सरस्वती जी ने इसी दिन आर्य समाज की स्थापना की एवं कृणवंतो विश्वमआर्यम का संदेश दिया।

7) सिंध प्रान्त के प्रसिद्ध समाज रक्षक वरूणावतार भगवान झूलेलाल इसी दिन प्रगट हुए।

8) राजा विक्रमादित्य की भांति शालिवाहन ने हूणों को परास्त कर दक्षिण भारत में श्रेष्ठतम राज्य स्थापित करने हेतु यही दिन चुना। विक्रम संवत की स्थापना की ।

9) युधिष्ठिर का राज्यभिषेक भी इसी दिन हुआ।

10) संघ संस्थापक प.पू.डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार का जन्म दिन।

11) महर्षि गौतम जयंती

भारतीय नववर्ष का प्राकृतिक महत्व :

1) वसंत ऋतु का आरंभ वर्ष प्रतिपदा से ही होता है जो उल्लास, उमंग, खुशी तथा चारों तरफ पुष्पों की सुगंधि से भरी होती है।

2) फसल पकने का प्रारंभ यानि किसान की मेहनत का फल मिलने का भी यही समय होता है।

3) नक्षत्र शुभ स्थिति में होते हैं अर्थात् किसी भी कार्य को प्रारंभ करने के लिये यह शुभ मुहूर्त होता है।

इस्लामी नव वर्ष

इस्लामिक कैलेंडर का नया साल मुहर्रम होता है। इस्लामी कैलेंडर एक पूर्णतया चन्द्र आधारित कैलेंडर है जिसके कारण इसके बारह मासों का चक्र 33 वर्षों में सौर कैलेंडर को एक बार घूम लेता है। इसके कारण नव वर्ष प्रचलित ग्रेगरी कैलेंडर में अलग अलग महीनों में पड़ता है।

हिब्रू नव वर्ष

हिब्रू मान्यताओं के अनुसार भगवान द्वारा विश्व को बनाने में सात दिन लगे थे। इस सात दिन के संधान के बाद नया वर्ष मनाया जाता है। यह दिन ग्रेगरी के कैलेंडर के मुताबिक 5 सितम्बर से 5 अक्टूबर के बीच आता है।

मेरा आम का पेड़

माँ कहती है कि जब मैं पैदा हुई थी तब माँ ने पिताजी से कहा था कि आंगन में एक आम का पेड़ लगवा दो। आज मैं 20 साल की हो गई हूँ और वह आम का पेड़ भी मेरी तरह बड़ा होकर एक विशाल वृक्ष में बदल गया है। अब तो उसमें मीठे मीठे रसीले आम भी फलने लगे हैं।

आज पता नहीं क्यों इस पेड़ को देख कर मुझे अपने बचपन की याद आ रही है। जब मैं बचपन में रोती थी तब माँ मुझे समझाने के लिए कहती थी - "देख वह तेरा दोस्त है वह तो कभी नहीं रोता, पर तू है एक नमूना जो हर वक्त रोती रहती है।" फिर मैं चुप हो जाती थी। जब माँ मुझे मारने के लिए ढूंढती थी तब मैं आकर उस पेड़ के पीछे छुप जाती थी। तब पता नहीं ऐसा लगता था कि पेड़ एक दोस्त की तरह मुझे बचा लेता है। जब जब मेरे दोस्तों से मेरा झगड़ा हो जाता, तब मैं पेड़ के नीचे बैठ कर रोती थी, और तब पेड़ से ठंडी ठंडी हवाएं मेरे सर को सहलाती थी। बचपन में हम सहेलियों ने उसी पेड़ के नीचे पता नहीं कितनी बार गुड्डे गुड्डियों की शादी करवाई है और आज उसी पेड़ के नीचे मेरे शादी की मंडप बन रहा है।

मैं तो अब 2 दिन के बाद ससुराल चली जाऊंगी और इस आम के पेड़ को बहुत याद करूंगी। जिसने मुझे बचपन से लेकर आज तक माँ की तरह पाला है। हर साल मीठे मीठे आम दे कर खुश किया, और तो और मानो वह मुझे संगीत सुनाने के लिए पता नहीं कितने सारे पंछियों को बुलाता था। मेरे सेहत का ध्यान रखते हुए हमेशा ताजी-ताजी हवाएं देता था। वह आम का पेड़ बिल्कुल मेरी मां की तरह मेरा ख्याल रखता था। मैं कभी नहीं भूल पाऊंगी मेरे इस आम पेड़ वाली माँ को जिसने मुझे बचपन से लेकर संभाला है और अब मेरी विदाई कर रहा है।

सस्मिता महांति,
+3 तृतीय वर्ष

एक बूंद

बारिश की बूंद को देखकर दिल में ख्याल आया कि यह बूंद कहाँ जाएगी? जब मैं इन्हीं विचारों में मग्न थी तब देखा एक छोटी सी बूंद मुझे बुला रही है। वो सपना था या हकीकत पता नहीं, लिकिन मैं भी उसी के संग बूंद बन गई। पहले पहल ही मैं घबरा गई थी क्योंकि बारिश की करोड़ों बूंदो में मैंने अपने आप को खो दिया था। तभी उस बूंद ने मुझे हौसला दिया और बताया कि आगे और भी तकलीफें आएंगी। इसके बाद फिर सफर शुरू हुआ, इस बार मैं पहाड़ों पर गिरी तब मुझे यह भी याद नहीं आया कि मैं कभी बूंद थी। मैं दुनिया में क्यों आयी, यह मुझे भी पता नहीं थी। तब वो बारिश की बूंद फिर मेरी पास आकर कहने लगी कि सफर अभी खत्म नहीं हुआ है। इस बार मैं फूलों पर गिरी और खुद को सबसे खूबसूरत समझ बैठी। लिकिन तभी तेज धूप ने मुझे मिटा दिया और मुझे मेरे अस्तित्व की याद दिला दिया। मैं हौसला खो रही थी, तभी वो बूंद फिर मेरी पास आयी और आगे बढ़ने का हौसला दिलाती रही। अब मैं कोरोड़ों बूंदों के साथ बरस रही थी तभी जाकर एक खेत में गिरी, मेरी गिरते ही किसान खुश हो गया, आँखों में आँसू भर कर मेरा स्वागत किया। तभी मुझे मेरे सफर का पहला उद्देश्य पता चला। अब मुझे मेरे सफर का आखिरी पड़ाव दिखाई दे रहा था। मैं सागर की अतल गहराईयों में पड़े एक सीप में जा पड़ी और मोती बन कर दुनिया के सामने आयी।

इस छोटी सी बूंद ने मुझे समझाया कि कठिन समय में हौसला ना खोकर इसका सामना करो। क्योंकि तुम एक बूंद ही क्यों ना हो, कठिन संघर्ष एवं परिश्रम से मोती बन सकते हो।

श्रावणी महान्ति,
+3 द्वितीय वर्ष

श्रीरामचरितमानस में करुण रस

श्री रामचरितमानस तुलसीदास दास जी द्वारा रचित है। जिसमे तुलसीदास जी ने अयोध्या कांड को करुण रस से रंजित किया है। श्रीरामचरितमानस एक समन्वयात्मक ग्रंथ के रूप में भी जाना जाता है। जो केवल हिंदी साहित्य में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में सभी भाषाओं में अनूदित है, तथा प्रसिद्ध है। अयोध्या कांड में वर्णित करुण रस की अनुभूति को मैं अपनी भाषा के माध्यम से व्यक्त करना चाहती हूं।

अयोध्या नरेश राजा दशरथ जी को अपनी तीनों रानियों कौशल्या, कैकयी, सुमित्रा से चार पुत्ररत्न रामचंद्र, भरत, शत्रुघ्न एवं लक्ष्मण की प्राप्ति हुई। चारों पुत्र विवाह करके अयोध्या आते हैं। सारे अयोध्यावासी आंनद से झूमने लगते हैं। प्रजा से लेकर राजा तक सब खुश थे। एक दिन राजा दशरथ दर्पण देखकर अपने मुकुट को सीधा कर रहें थे। तब उन्होंने देखा कि कान के पास बाल सफेद हो रहें हैं। उन्हें अपने कर्तव्य का बोध हुआ। उन्होंने सोचा कि रामचंद्र सब प्रकार से राजा के लिये योग्य हैं, अब समय आ गया है कि उनको युवराज बना देना चाहिए जिससे उन्हें उनके जन्म का लाभ मिल सके, तथा उन्हें अब राज कार्य से विरक्त हो जाना चाहिए। राजा दशरथ ने यह सोच विचार कर गुरु वसिष्ठ के पास गए और उनसे इस विषय में चर्चा की,तथा उनसे अनुमति ली। उसके बाद अयोध्या में रामचंद्र जी की राज्याभिषेक की तैयारियां धूम धाम से होने लगी। सब लोग राज्याभिषेक की तैयारीयों में जुट गए। ब्राह्मणों को दान दिये गए, पूजा पाठ किये गए। पूरी आयोध्या को सजाया गया।

जब सब लोग राज्याभिषेक की तैयारी में लगे थे। राजा दशरथ यह शुभ समाचार सुनाने के लिए अपनी प्रिय रानी कैकेयी के पास गए तो उन्हें पता चला कि कैकेयी कोपभवन में हैं। राजा कोपभवन में गये और रानी कैकेयी की दशा को देख कर अत्यन्त व्यथित हो गए। जब राजा दशरथ ने रानी कैकेयी से इस आक्रोश का कारण पूछा तब रानी ने कुछ भी नहीं कहा। जब राजा ने रानी से कहा कि - "हे मेरी प्रिय रानी तुम्हें किसीने कुछ कहा है तो तुम मुझसे कहो। अगर तुम्हें कुछ चाहिए तो मुझसे कहो, मैं तुम्हें सब कुछ दूंगा। यहां तक कि मेरे प्राण भी। तुम तो मेरी सबसे प्रिय रानी हो। मैं राम की सौगंध खाकर कहता हूँ कि तुम्हें जो भी चाहिए मैं दूंगा।" तब रानी राजा दशरथ जी द्वारा अतीत में दिए गए अपने दोनों वरदान को मांगती है। जिस वरदान को सुनकर राजा दशरथ स्तब्ध हो जाते हैं। कुछ भी बोल नहीं पाते हैं। उनकी अवस्था जल बिन मछली की तरह हो जाती है। कैकेयी द्वारा मांगे गये दो वरदान इस प्रकार थे - पहला उनके पुत्र भरत का राजतिलक और दूसरा रामचंद्र को 14 वर्ष के लिए वनवास। इन दोनों वरदानों के माँगते ही करुण रस का आरम्भ होता है। राजा दसरथ रानी के कैकेयी से कहते है कि - "भरत का राजतिलक मैं कर दूंगा, इसमें मुझे कुछ आपत्ति नही हैं।

लेकिन मैं तुम्हें दूसरा वरदान नही दे सकता। तुम उस वर की जगह कोई दूसरा वर मांग लो।“ किन्तु रानी अपनी माँग से पीछे नहीं हटती है। और वह राजा से कहती है कि - “अगर आप वर नहीं देना चाहते थे तो आपने इस तरह का वचन क्यों दिया। अगर आपने वचन दिया है तो उसको पूरा भी कीजिए, नहीं तो सत्य को छोड़ दीजिए और जगत में अपयश के भागीदार बन जाइए। रघुकुल की रीत तो यही हे की प्राण जाए पर वचन ना जाए। अगर आप अपनी वचनों की रक्षा नहीं कर सकते हैं तो आपने वरदान मांगने को कहा ही क्यों।“

काल रात्रि बीत जाने के पश्चात शुभमुहूर्त आ गया जब राजतिलक होने वाला था। परंतु विधाता को कुछ और ही मंजूर था। राज तिलक में राजा नहीं आये तो मंत्री सुमंत्र राजा को बुलवाने गए और राजा दशरथ की अवस्था को देखकर आश्चर्य चकित रह गए। पत्ता करने पर राजा की इस अवस्था के बारे में पता चला। अयोध्यावासी राजा की इस अवस्था का कारण जानकर व्यथित हो गये और यहां से पाठकों में तथा अयोध्या वासियों में करुण रस की अनुभूति स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

"मुख सुखाहीं लोचन स्रवहिं सोकु न हृदयँ समाइ
मनहुँ करून रस कटकई उतरी अवध बजाइ।"

इस दोहे से स्पष्ट हो जाता है कि विधाता को कुछ और ही मंजूर था। इसलिए जहां पर कुछ क्षण पहले खुशियों का माहौल था वहाँ अब दुखों की बाढ़ आ गयी जो सारे खुशियों को बहा कर ले गया।। सुख का मुहूर्त दुःख में परिवर्तित हो गया।

राम के वनवास जाने की खबर सुनकर सारे अयोध्यावासी व्यथित तथा चिन्तित हो गए। सबके मुंह सूख गए, आंखों से अश्रु धार बहने लगी। इस खबर से सबके हृदय में दुःख समा गया सब लोग कैकेयी को बुरा भला कहने लगे। कुछ लोग राजा को भी कोसने लगे कि आखिर ऐसे वरदान दिये ही क्यों। जहां देखो लोग बातचीत करने लगे राजा को सोच समझकर वर देना चहिये था। विधाता ने अमृत दिखाकर हम सबको विष क्यों दिया? हम क्या देखने वाले थे और क्या देख रहे हैं। राजा दशरथ ने रानी कैकेयी पर विश्वास करे बहुत गलत किया। उन्हें ऐसा नहीं करना था। इस तरह का वातावरण देखकर लग रहा था मानो करुण रस अपनी पूरी सेना को लेकर बाजे गाजे के साथ अयोध्या नगरी में प्रवेश कर चुका है। सब लोग कैकेयी को दोष दे रहे थे। उसे महा पापिनी कहने लगे। लोग आपस में एक दूसरे से कहते है कि - “आज ऐसा क्या हो गया कि रानी कैकेयी अपने पुत्र के समान राम को इतना बड़ा दुःख दे रही हैं। रानी पत्ते पर बैठकर पेड़ क्यों काटना चाहती है। रानी कैकेयी तो भरत से भी अधिक प्रेम राम को करती थी तब ऐसा क्या हो गया कि राम को इस दंड के योग्य उन्होंने समझा।“ रघुकुल की वयोवृद्ध स्त्रियां रानी को समझाने लगी कि - “तुम ऐसा मत करो। राम तो तुम्हारे पुत्र के समान है। रानी

कौसल्या ने तुम्हारा कौनसा अहित किया है जो तुम उसे इतनी बड़ी सजा दे रही हो? अभी भी वक्त है तुम अपना वरदान वापस मांग लो जिससे सब अयोध्या में रुक जाएंगे वरना सब ओयोध्या छोड़के चले जायेंगे। राम जी के बिना सीताजी नहीं रहेंगी और ना ही लक्ष्मण यहां रहेंगे। भरत भी राम के बिना राज्य नही करेंगे और ना ही राजा दशरथ राम के बिना जीवित रह पाएंगे। इसलिए रानी कैकेयी तुम अपने क्रोध को भूलकर रामचंद्र को वन जाने से रोक दो। जिससे तुम्हारे लिए लोगों के हृदय से शोक और कलंक सदा के लिए मिट जाएगा। इस तरह का अन्याय मत करो कृपा करके रामचंद्र जी को तुम वन जाने से रोक दो और पाप का भागीदार मत बनो।"

लोग कहने लगे कि जिस तरह सूर्य के बिना संसार, प्राणों के बिना शरीर, चंद्रमा के बिना रात नहीं हो सकता ठीक उसी तरह रामचंद्र के बिना अयोध्या अयोध्या नहीं रह सकेगा। तुम पाप की भागीदार बन जाओगी। इसलिए तुम इस अनर्थ को मत होने दो। ऐसा लगता है जैसे करुण रस शरीर धर कर उपस्थित हो गया हो, इसे पढ़ कर पाठक के मन में स्वतः करुण रस का जागृत होना स्वभाविक है।

कविता प्रधान,
+3 तृतीय वर्ष

कालिदास

नाटककार मोहन राकेश ने विख्यात कवि कालिदास को 'आषाढ़ का एक दिन नाटक' के नायक के रुप में प्रस्तुत किया है। इस नाटक में कालिदास को एक स्वार्थी व्यक्ति के रूप में चित्रित किया गया है। वह मल्लिका जैसी किशोरी के जीवन को नष्ट करने का उत्तरदायी है।

नाटक के प्रारम्भ में जब कालिदास से भेंट होती है तब हम उसे एक भावुक कवि के रूप में पाते हैं। जो प्रकृति के सौंदर्य को देखकर अपनी रचनाएं करता है। राजपुरूष दन्तुल के बाण से आहत हरिण-शावक को घर ले आता है, उसके शरीर से लहू टपक रहा था। हरिण-शावक को किस प्रकार जीवन दान दें जिससे वह बच जाए, कालिदास उसके लिए प्रयास करता है। इतने में दन्तुल आकर उससे हरिण शावक को माँगता है और कालिदास देने से मना कर देता है। अम्बिका कालिदास की सारी बातों को सुनकर क्रोधित हो जाती है। कालिदास हरिण को लेकर बाहर चला जाता है। जिनके पीछे दन्तुल जाता है मगर मल्लिका जाने से रोकती है और कहती है उन्हें जाने दो।

कालिदास एक कवि होने के कारण उनकी रचना सबको पसंद आती है। उज्जयिनी से आचार्य वररूची उन्हें लेने आते हैं और उज्जयिनी में उन्हें ले जाकर राज - सम्मान देना चाहते हैं। यह सुनकर वह जाने से वह मना कर देता है। वह चंद सिक्कों में दास नहीं बनना चाहता है। उसे स्वतंत्रता चाहिए इसलिए वह इन्कार कर देता है। मल्लिका के समझने पर वह मान जाता है। वर्षा और मेघ गर्जन होता है और वह चला जाता है।

वह उज्जयिनी जाकर राज्य संभालता है और प्रियंगुमंजरी से विवाह कर लेता है और मल्लिका को भूल जाता है। वहां जाकर अपनी रचनाएं करता है। कश्मीर का शासन इसलिए ग्रहण करते हैं क्योंकि वह अपने अपमान का बदला ले सके पर बाद में सामना ना कर सकने के कारण उसे कश्मीर छोड़कर भागना पड़ता है।

कालिदास मल्लिका से मिलने आता हैं तब उन्हें पता चलता है कि मल्लिका और विलोम का विवाह हो चुका है, उनकी एक बेटी भी है। यह सब जानकर कालिदास फिर से मल्लिका को छोड़ कर चला जाता है। कालिदास के रचनात्मक व्यक्तित्व की मूल प्रेरणा मल्लिका है। मल्लिका अपने त्याग और समर्पण में महान लगने लगती है और कालिदास जैसा व्यक्ति बहुत साधारण लगता है।

शरीफा शरवारी, +3 तृतीय वर्ष

'भोर का तारा' जगदीश चंद्र माथुर द्वारा रचित एकांकी है। जो प्रेम पूर्ण ऐतिहासिक कथा है। इस एकांकी में शेखर, माधव और छाया तीन पात्र हैं। जिनमें शेखर मुख्य पात्र है।

शेखर एक भावुक कवि है। जो हर समय कविता रचना में व्यस्त रहता है। जहाँ सौन्दर्य दिखता है उसे वहाँ कविता दीख पड़ती है। उसके लिए वहाँ कविता जीवित हो उठती है । वह खुद कहता है - "मुझे तो सौन्दर्य ही कर्तव्य जान पड़ता है। मुझे तो जहाँ सौंदर्य दीख पड़ता है वहाँ कविता दीख पड़ती है, वहीं जीवन दीख पड़ता है। वह राजपथ में बैठी अंधी भिखमंगी हो या अपने दोस्त माधव को देखकर।" एक कवि का तन, मन, ध्यान सब निरंतर कविता लिखने की तरफ रहता है। इसलिए वह जो भी लिख दे उसे कम लगता है और हमेशा वह प्रयत्न करता है कि इसे भी और ज्यादा अच्छी रचना करने के लिए। शेखर की हर बात कविता प्रतीत होती है। वह खुद कहता है - "मैं परवाह करता हूँ फूल की पंखुड़ियों पर जगमगाती हुई ओस की, संध्या में सूर्य की किरणों को अपनी गोद में समेटने वाले बादल के टुकडों की, सुबह को आकाश के कोने पर टिमटिमाने वाले तारे की .....।" इस तरह वह एक भावुक कवि के रूप में हमारे सामने आता है।

एक भावुक कवि के साथ साथ शेखर एक प्रेमी भी है। वह छाया से प्रेम करता है और वह उसके जीवन का साधन हो जाता है। छाया से ही उससे कविता लिखने की प्रेरणा मिली। शेखर को सौन्दर्य से कविता लिखने की प्रेरणा मिलती है और छाया में उसे वह सौन्दर्य दिखता है। यह बात वह खुद छाया से कहता है "जिस दिन में तुमसे दूर हो जाऊँगा उस दिन मैं सौन्दर्य से भी दूर हो जाऊँगा। अपनी कविता से दूर हो जाऊँगा मेरी कविता मर जाएगी।" इससे पता चलता है कि छाया शेखर के लिए क्या मायने रखती है।

आत्मविश्वास से व्यक्ति महत्वाकांक्षी बनता है। एक कवि जितना भी लिखले उसे और लिखने की चाह रहती है। छाया से विवाह करने से पूर्व शेखर केवल कविता लेखन को ही अपने जीवन की साधना मानता था। लेकिन छाया से विवाह करने के बाद राजभवन में रहते रहते उसकी महत्वाकांक्षा बढ़ जाती है। वह मात्र एक दरबारी कवि बनना नहीं चाहता बल्कि कविता के बल पर सम्राट स्कंद विक्रमादित्य के दरबार का कवि कुल - शिरोमणि बनना चाहता है। यह उसके कथन से स्पष्ट हो जाता है - "छाया यह काव्य बड़ी लगन का फल है। कल मैं इसे सम्राट की सेवा में ले जाऊँगा और फिर जब मैं उस सभा में इसे सुनाना आरम्भ करूँगा तब पूरे उज्जयिनी की आँखें मेरे ऊपर होंगी। महाकाव्य, महाकाव्य! उस समय सम्राट गदगद हो जाएंगे और मैं कवि शिरोमणि हो जाऊँगा।" इसी कारण अपने भोर का तारा नामक महाकाव्य की रचना इस उम्मीद में की थी कि एक दिन यह महाकाव्य उसे ऊँचा स्तर दिलाएगा।

किसी भी व्यक्ति के लिए राष्ट्र की सेवा से बढ़कर और कुछ भी नहीं होता। जब राष्ट्र के लिए बलिदान का वक्त आता है तो कुछ ही लोग यह कर पाते हैं। तभी उसी वक़्त उनका राष्ट्रप्रेम नज़र आता है। शेखर को भी कुछ ऐसा ही करता है। वह भी तब जब वह सफलता के शिखर पर पहुँचने वाला होता है। भोर का तारा नामक महाकाव्य के द्वारा कवि कुल शिरोमणि बनना चाहता था लेकिन माधव तभी हूणों के आक्रमणों की सूचना लेकर शेखर के पास आता है, क्योंकि उसे पता है कि शेखर की वाणी में बहुत प्रखरता है। जिससे वह लोगों को जागृत कर सकता है। इसी कारण छाया के रोकने पर भी छाया की परवाह किये बिना शेखर ने अपने महाकाव्य 'भोर का तारा' को जला देता है। क्योंकि आज एक कोमल कवि की नहीं बल्कि एक सूरज की तरह जलने वाला कवि चाहिए जो अपने तेज प्रकाश से जनता को प्रखरता दे सके। छाया माधव से कहती है कि - "तुमने तो मेरा प्रभात ही नष्ट कर दिया।" माधव छाया के यह शब्द सुनकर बाहर जाता जाता रुक गया और पीछे की खिड़की खोल देता है। इससे बाहर की आवाज़ स्पष्ट सुनाई देती है। शेखर और उसके साथ पूरे जन-समूह के गाने का स्वर सुनाई देता है -

"नगाड़े पै डंका बजा है, तू शास्त्रों को अपने संभाल,
बुलाती है वीरों की तुरही, तू उठ कोई रास्ता निकाल।"

माधव छाया से बोलता है कि - "मैंने तुम्हारा प्रभात नष्ट नहीं किया बल्कि प्रभात तो अब होगा। शेखर तो अब तक भोर का तारा था अब वह प्रभात का सूर्य होगा।" अर्थात शेखर तो अब तक कोमल कवि था अब वह एक सूरज की तरह प्रखर कवि होगा।

हफ़िज़ा बेगम,
+3 तृतीय वर्ष

ललित कुमार

ललित कुमार के जीवन का सफ़र 'असामान्य से असाधारण' तक का सफ़र है। पोलियो जैसी बीमारी ने उन्हें सामान्य से असामान्य तो बना दिया, लेकिन अपनी मेहनत और जज़्बे के बल पर उन्होंने स्वयं को साधारण भीड़ से इतना अलग बना लिया कि वे असाधारण हो गए। उनके इसी सफ़र की कहानी समेटे एक किताब आई 'विटामिन ज़िन्दगी'. एक बच्चा जिसके पैरों को 4 साल की उम्र में ही पोलियो मार गया, कैसे उससे जूझते हुए उसने समाज में अपना एक अहम मुकाम बनाया, यह किताब उसी की कहानी कहती है।

ज़िंदगी में आने वाली तमाम चुनौतियों को लेखक ने किस तरह से अवसर में बदला, यह उसी सकारात्मकता की कहानी है। यह किताब बताती है कि जिस तरह शरीर को विभिन्न विटामिन चाहिए, उसी तरह मन को भी आशा, विश्वास, साहस और प्रेरणा जैसे विटामिनों की ज़रूरत होती है। खासकर तब जब हमारा सामना समस्याओं, संघर्ष, चुनौतियों और निराशा से होता है।

आज आलम यह है कि कविता कोश, गद्य कोश, WeCapable.com, दशमलव और TechWelkin.com जैसी परियोजनाओं के संस्थापक ललित कुमार को विकलांगजन के लिए रोल मॉडल हेतु साल 2018 में राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। पोलियो जैसी बीमारी, अभावग्रस्त बचपन और बेहद कठिन किशोरावस्था के बावजूद अपनी मेहनत और प्रतिभा के बल पर संयुक्त राष्ट्र संघ जैसी अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं में काम कर चुके ललित विदेश में उच्च

शिक्षा प्राप्त कर चुके हैं। इन दिनों वे Dashamav, YouTube channel और WeCapable.com के ज़रिए देशभर के विकलांगजन और अन्य ज़रूरतमंद लोगों की सहायता कर रहे हैं।

पोलियो जैसी बीमारी के बावजूद ललित कुमार ने अपने जीवन को वह मुकाम दे दिया जिससे वह एक मिसाल बन गए. उनके जीवन गाथा पर लिखी पुस्तक 'विटामिन ज़िन्दगी' का यह अंश 'अब तो पथ यही है!' साहित्य आजतक के पाठकों के लिए खास-

“आप परेशान हैं?... एक के बाद एक समस्याएँ जीवन में आती ही रहती हैं... तो क्या आपको लगता है कि जीवन की प्रॉबलम्स कभी खत्म नहीं होंगी? क्या आप जीवन में हार मान रहे हैं?...

जिस तरह शरीर को अलग-अलग विटामिन चाहिए -- उसी तरह हमारे मन को भी आशा, विश्वास, साहस और प्रेरणा जैसे विटामिनों की ज़रूरत होती है। लेखक ललित कुमार इन सभी को मनविटामिन कहते हैं। "विटामिन ज़िन्दगी" एक ऐसा कैप्स्यूल है जिसमें ये सभी विटामिन मिलते हैं।

हमारा सामना समस्याओं, संघर्ष, चुनौतियों और निराशा से होता ही रहता है -- इन सबसे जीतने के लिए हमारे पास ‘विटामिन ज़िन्दगी’ का होना बेहद आवश्यक है।

विटामिन ज़िन्दगी एक किताब नहीं बल्कि एक जीवन है -- एक ऐलान है कि इंसान परिस्थितियों से जीत सकता है। एक बच्चा जिसे चार साल की ही उम्र में ही पोलियो जैसी बीमारी हो गई हो -- उसने कैसे सभी कठिनाइयों से जूझते हुए समाज में अपना एक अहम मुकाम बनाया -- यह किताब उसी की कहानी कहती है। ज़िन्दगी में आने वाली तमाम चुनौतियों को लेखक ने किस तरह से अवसरों में बदला -- यह उसी सकारात्मकता की कहानी है।

ललित का सफ़र "असामान्य से असाधारण" तक का सफ़र है। पोलियो जैसी बीमारी ने उन्हें सामान्य से असामान्य बना दिया, लेकिन अपनी मेहनत और जज़्बे के बल पर उन्होंने स्वयं को साधारण भीड़ से इतना अलग बना लिया कि वे असाधारण हो गए। इसी सफ़र की कहानी समेटे यह किताब ज़िन्दगी के विटामिन से भरपूर है।

इस किताब में सभी के लिए कुछ-न-कुछ है जो हमें हर तरह की परिस्थितियों का सामना करना सिखाता है।“

"एक मुलाकात, बस एक मुलाकात ही काफी है कि मैं अपनी बात रख सकूँ।" आराध्या चिंतित होते हुए बोली।

पर जो भी हो, तू उसे फ़ोन भी तो कर सकती है ना?" मैंने अपनी सलाह देते हुए कहा

"नहीं वीणा, मैं उसे जानती हूँ। वो जिस तरह गई थी मुझे नहीं लगता कि वो मुझसे बात करना भी पसंद करेंगी। मुझे उसे मिलना ही पड़ेगा।"

"तू जिस तरह बता रही है, मुझे नहीं लगता वो राज़ी होगी तुझसे मिलने के लिए भी।"

“नहीं होगी। जानती हूं। इसीलिए कल मैं उसके पास जाउंगी। सोचा नहीं था दो साल बाद हमारी मुलाकात इस तरह होगी कि फिर शायद कभी न होगी।" आराध्या के माथे पर चिंता और दुःख की रेखायें साफ झलक रही थी।

"पर इसमें गलती भी तो किसी एक कि नहीं है, या फिर किसी की भी नहीं है!" मैंने दिलासा देते हुए कहा।

" जानती हूँ रे, किसी की भी गलती नहीं है। पर भविष्य में क्या होना है यह किसको पता है? सबको अपनी तकदीर लिए आगे बढ़ना ही पड़ता है। मैंने भी बढ़ती रही, पर मुझे क्या मालूम था कि मैं जिस तकदीर को लिए आगे बढ़ रही हूं वह मेरी सबसे बड़ी गलती होगी।“

“दो साल पहले क्या मैं नहीं चाहती थी कि अपनी बचपन के दोस्त की खुशी में शामिल रहूँ। क्या मुझे पता था कि जब मैं किसी एक शहर से दूसरे शहर को अपनी भविष्य की राह पर निकल पड़ूंगी तभी वह भी अपने पति के साथ एक घर से दूसरे घर को चली जाएगी। भविष्य के राह पर चलते हुए हर वक्त हमें अपने पैरों को आगे पीछे करना ही पड़ता है। भले ही आगे कुछ

नया मिल जाए या पीछे कुछ पुराना छूट जाए। मैंने भी बढ़ाया। नहीं देख पाई उसकी शादी और उसके पति को। नये शहर में सब कुछ नया। वहाँ एक तरह से टिक जाने के बाद अपनी मां और बाबा को भी यहां बुला लिया। अब जब भुवनेश्वर में कोई था नहीं तो वहां जाती ही क्यों? अनु भी शादी करके अपने पति के साथ हैदराबाद चली गई थी और मैं ठहरी दिल्ली में। क्यों जाती और किसके लिए जाती भुवनेश्वर।

सुना था उसका पति भी कहीं एक बैंक में बतौर मैनेजर काम करता है। फिर बाबा ने बताया कि शादी के 8 महीने बाद ही उसका तलाक हो गया था। तलाक की वजह कोई लड़की थी। बहुत कोशिश करने के बाद आखिरकार एक साल बाद उससे बात हो पाई क्योंकि वो अब अपने बाबा के यहां भुवनेश्वर में ही रहती है। पर उस वक्त बहुत देर हो चुकी थी कुछ समझाने या समझने का वक्त गुजर चुका था। इसलिए अतीत के बारे में मैंने उसे कुछ भी नहीं पूछा। उसके साथ बातों के दौरान मैंने भी अपनी बात बताना ठीक समझ कर उसको अविनाश के बारे में सब कुछ बता दिया। सब कुछ तो बता दिया था पर नहीं बता पाई थी उसका नाम और उसके वैवाहिक जीवन के बारे में। जो शायद मेरी एक भूल भी थी क्योंकि इंडिया में एक ही नाम के बहुत सारे व्यक्ति हो सकते हैं। पर बहुत सारे व्यक्तियों में उस एक इंसान को जानना आसान भी होता अगर में अनु को अभी के वैवाहिक जीवन के बारे में भी बता सकती। ऐसे बहुत दिनों के बाद अविनाश को भुवनेश्वर किसी काम के वजह से जाना था, तो मैंने भी अच्छा अवसर देखकर उसके साथ जाने का निर्णय लिया। क्योंकि मैं अनु से मिलना चाहती थी और अविनाश को भी उससे मिलाना चाहती थी।

वहां पहुंचने के बाद एक दिन मौका पाकर मैंने अनु को मिलने के लिए एक रेस्टुरेंट में बुलाया। अनु पहले से वहां पहुंच चुकी थी। पता नहीं अनु को जब मैंने अविनाश से मिलवाया तो वे दोनों एक दूसरे को ऐसे देखते रहें जैसे कि वे पहले से मिले हुए हैं। फिर हठात अनु ने गुस्से से बिना कुछ कहे वहाँ से निकल गई।

फिर बाद में मुझे अविनाश ने बताया कि अनु ही उसकी पहली बीवी है। ये जानकर दिल को ठेस पहुंची की मैं ही वो लड़की थी जिसके कारण उनका संबंध बिखर गया।“

इतना कहने के बाद आराध्या फूट-फूट कर रोने लगी। तभी दरवाजे पर किसी ने खटखटाया, मैंने देखा तो दरवाजे के पास अनु खड़ी हुई थी अनु को देखकर आराध्या कुछ बोलती, उससे पहले ही उसने कहा -

" देख आराध्या जिंदगी में बहुत सारे फैसले हम सोच समझकर नहीं लेते। बस मन को एक चीज लुभा जाती है और उसे हम हासिल कर लेते हैं जैसे उसकी अच्छाई बुराई से हमें कुछ लेना-देना ही नहीं होता, और हम अपने जीवन को किसी दूसरे के हाथों में सौंपने से पहले हमारे लिए यह जान लेना आवश्यक हो जाता है कि वह हाथ साफ हो जो हमारा हाथ थमेगा। मैं अभी और तेरे बीच दरार पैदा करने नहीं आई हूं और ना ही तेरे मेरे रिश्ते को खत्म करने आई हूं।

मैं बस इतना कहने आई हूं कि हो सकता है मैं अविनाश को अच्छे से नहीं जानती। पर उन 8 महीनों में मैं जितना जानती हूं अविनाश एक भौंरा है जो कभी किसी एक फूल पर नहीं टिकता। ऋतुओं के साथ फूलों की चाह बदलती है, जब उसकी जिंदगी में मैं थी तब उसे तू पसंद आ गई और शायद हो सकता है जब उसके जिंदगी में तू हो उसे कोई और भी पसंद आ जाये। और मैं यह कभी नहीं चाहूंगी कि मेरी तरह मेरी सहेली की जिंदगी भी बर्बाद हो वह भी उस एक व्यक्ति के कारण। आगे तेरा फैसला, तू अच्छा समझ या बुरा लेकिन तू अगर अविनाश को अपनी जिंदगी में लाएगी तो मुझे खो बैठेगी।"

इतना कहकर अनु वहां से चली गई और आराध्या वहीं खड़ी की खड़ी रह गई।शा यद वह अपने अतीत की गहराई में चली गई थी। पर मेरे मन में एक प्रश्न उमड़ रहा था कि आखिर रिश्ते की वेदी पर कौन सा रिश्ता सबसे ज्यादा बड़ा होता है दोस्ती का या प्यार का।

पिंकी सिंह,
भूतपूर्व छात्रा

अब तो दर्शन दे दो माँ

कबसे नैना तरस गए हैं
अब तो दर्शन दे दो माँ
आकर मेरी दुःख व्यथा को
दूर तो तुम कर दो माँ
तुम्हारे दर्शन पाकर ही
धन्य पूर्ण हो जाऊँ मैं,
हर वर्ष करती हूँ मैं
तुम्हारी ही प्रतीक्षा माँ!
कबसे नैना तरस गए है,
अब तो दर्शन दे दो माँ!

सारे जग की माता हो तुम,
सबकी हो पालन हार!
अतुलनीया रूप है तेरा
शक्ति तेरा है अपरमपार
आकर सबके जीवन में
खुशियों के दीप जला दो माँ
कब से नैना तरस गये हैं,
अब तो दर्शन दे दो माँ!

फूलों जैसी कोमल काया,
ममता जैसी मूरत माया!
फिर भी तुम महिशासुरमर्दिनी
बुराई को संसार से किया विदा!
नारी शक्ति रूप होती है
विश्व को तुमने बतलाया माँ!
कब से नैना तरस गये हैं,
अब तो दर्शन दे दो माँ!

बांगी हँसदा, +3 प्रथम वर्ष

आ गई माता रानी आ गई

आ गई माता रानी आ गई

हमको था इंतजार

वो घ़डी आ गई ,

हो कर सिंह पर सवार

माता रानी आ गई ,

होगी अब मन की

हर मुराद पूरी ,

हरने सारे दुःख

माता अपने द्वार आ गई ,

आ गई माता रानी आ गई

आ गई माता रानी आ गई ।

माँ दुर्गा के आशीर्वाद से आपके जीवन में प्रकाश ही प्रकाश हो ।

(जय माता दी)

संगीता प्रधान, +3 प्रथम वर्ष

राजनैतिक भ्रष्टाचार - जुलूस

श्री कणाद ऋषि भटनागर 'जुलूस' एकांकी में राजनीतिक भ्रष्टाचार के विषय में वर्णन करते हैं। हमारे समाज में कई ऐसे भ्रष्ट राजनेता हैं, जो कहते हैं हम जनता की मदद करते हैं, पर उनकी मदद करने के बजाय उन्हें धोखा देते हैं। जो प्रभावशाली भाषण देते हैं। जिससे सब समझते हैं वे एक अच्छे वक्ता हैं। इन्हीं बातों से मासूम जनता को अपनी ओर खींचते हैं। जो जनता से पैसे लेकर कम पैसों में काम करते और बाकी पैसे हड़प लेते हैं। जो दिखावा करते हैं कि हम जनता के सेवक हैं, पर उसी जनता का शोषण करते हैं। जो कहते हैं - हम एक पैसा नहीं लेंगे, पर मासूम जनता को बड़ी चतुराई के साथ धोखा देते हैं और जनता की कमजोरी का फायदा उठाते हैं।

भ्रष्ट नेताओं के साथ जो रहते हैं वे भी भ्रष्टाचारी हो जाते हैं, नेता के साथ रहकर वे भी भ्रष्ट आचरण और लोगों को ठगने का काम करते हैं तथा नेता की तरह सोचते लगते हैं, देश के नागरिक होने के वाबजूद समाज में रहने वाले कमजोर लोगों को धोखा देते हैं।

भोले - भाले जनता को इन्सानों की परख नहीं होती है कि कौन अच्छा है और कौन बुरा। जनता अपनी परेशानी का हल ढूंढ़ने नेता के पास जाती है। क्योंकि उन्हें भाषण देता हुआ देखकर इतने प्रभावित होते है और मदद मांगने उनके पास जाते हैं। जनता जगह ना मिलने के कारण सरकारी जमीन पर घर बना कर रहते हैं। मगर वो जगह मेन रोड पर होने के कारण सरकार हटने का आदेश देकर एक नई जगह पर बसने का फैसला सुना देती है। वह अपनी पहली वाली जमीन पर अपना बिजनेस चलाते थे, मगर वहां से दूर कर देने से उन सब का बिजनेस ठप्प हो जाता है। इसलिए वे वहां से नहीं हटते हैं। नहीं हटने के कारण पुलिस आकर घर तोड़ देती है। कमजोर जनता यह सब सह नहीं सकती है, इसलिए वह नेता के पास जाती है, और नेता उनकी तकलीफों की आँच में अपनी रोटी सेंकते हैं।

गरीब लोगों के अधिकार उन्हें मिलने चाहिये, जैसे- शिक्षा, आवास, स्वास्थ्य आदि की पूर्ति होनी चाहिए। मगर जो प्रजा के लिए पैसे आते हैं जिससे प्रजा को हर वो सुविधा मिल सके, जो उनका अधिकार है। मगर नेता उन पैसों को हड़प लेते हैं। वह जनता तक पैसे पहुंचने नहीं देते। इन्हीं लोगों की वजह से देश का विकास होने के बजाए घटता जाता है।

शरीफा शरवारी, +3 तृतीय वर्ष

नारी

हमारे भारतीय समाज में नारी को बचपन से ही कुछ संस्कार दिए जाते है और उसे उन संस्कारों को सहेज कर रखना होता है। जैसे धीरे बोलना, किसके सामने ज्यादा नहीं हँसना, ऐसे कपड़े पहनना, वैसे उठना बोलना आदि। ऐसे में न जाने बच्ची का बचपन किस अंधेरे कमरे में गुम हो जाता है। हमारा पुरूष प्रधान समाज क्यों नहीं समझता कि नारी प्रकृति का अनमोल उपहार है। जिसके मन में कुछ कोमल संवेदनाएं होती हैं। वह ममता का रूप है और इस ममता रूपी नारी को हर रूप में हमेशा छल कपट ही मिला है। परन्तु आज की नारी इन सब बातों को छोड़कर काफी आगे निकल आई है।

आज नारी में आधुनिक बनने का होड़ लगी है। नारी के जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ है, वो सभी क्षेत्रों में आगे बढ़ रही है। पहले नारी का जीवन घर की चार दीवारों में ही बीत जाता था और विशेष रूप से नारी का एक ही कर्तव्य था कि वो घर संभाले। उसे घर की इज्ज़त मान कर घर में ही परदे के पीछे रखा जाता था।

आज नारी के कदम घर से बाहर की ओर बढ़ रहे हैं। पहले नारी की शारीरिक संरचना, सौंदर्य, वस्त्र आदि पर ध्यान दिया जाता था लेकिन आज की नारी इन सब बंधनों से बहुत आगे निकल गई है। वो अब अपने मनचाहे कपड़े पहन सकती है, स्वतंत्र है। परंतु दुःख इस बात का है कि अधिकांश लोग और नारी स्वयं भी अपनी आधुनिक वेशभूषा को और स्वछंद विचरण को ही नारी का आधुनिक होना मान रहे हैं। परंतु स्वतंत्रता अधुनिकता नहीं है। वास्तव में दमन का विरोध और प्रगतिशील नवीन विचारों को अपनाना ही नारी का आधुनिक होना है। इस ओर भी नारी ने अदम्य साहस का परिचय दिया है।

इसके अतिरिक्त धैर्य एवं त्याग की ओर से नारी को पृथ्वी की संज्ञा दी गई है। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई और पन्ना धाय जैसी नारियों ने इतिहास में नारी शक्ति और त्याग को सिद्ध किया है। लेकिन आज नारी ने अगर कुछ कहा या किया तो उसपर किसी न किसी रूप से उँगली उठा दी जाती है। यहां तक कि रामायण काल में सीता माता की परीक्षा ली गई। क्योंकि वो रावण द्वारा अपहृत होने के बाद लंका में रही और अपवित्र हो गयी। उस युग में भी माता सीता की परीक्षा लेकर यह साबित कर दिया गया कि नारी का महत्व उसके होने से नहीं बल्कि पुरुष की बनाई परम्पराओं में बंध कर रहने में है। जब हमारे देश में सीता माता तक इन परंपराओं की आँच से नहीं बची तो हम तो एक सामान्य नारी हैं। परन्तु समय अब बदल रहा है। अब नारी इन सब बातों की परवाह किये बिना घर से निकल कर आधुनिक होने का परिचय दे रही है। चाहे समाज उसे किसी भी प्रकार का दर्जा क्यों न दे।

नारी को मानवीय अधिकारों से वंचित किया जाता रहा है। दमन का विरोध करने की शिक्षा पाने का अधिकार नहीं दिया जाता था। परन्तु बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में नारी स्वतंत्र

होकर अपनी प्रातिभा को प्रदर्शित करने लगी है। शिक्षा में तो नारी ने बहुत बड़ी उपलब्धि प्राप्त कर ली है। शिक्षा के द्वारा उसके लिए सारे द्वार खुल गए है। ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जिसमें उसने प्रगति ना की हो।

नारी को भोग्या मानने वाले पुरूष प्रधान समाज में नारी ने प्रमाणित कर दिया कि वो भी इस पुरूष प्रधान देश में अपना लोहा मनवा सकती है। आज उसकी प्रतिभा और दृष्टिकोण पुरूष से पीछे नहीं है। साहित्य, चिकित्सा, विज्ञान जैसे अनेक क्षेत्रों में नारी ने अपनी प्रतिभा प्रदर्शित की है। आज नारी अतंरिक्ष में जाने के साथ साथ हिमालय की दुर्गम चोटी पर भी चढ़ रही है और ऐसा कोई क्षेत्र नहीं छोड़ा है जहाँ वो अपनी विजय का झंडा ना फहरा रही हो।

नारी में विद्यमान उसकी प्रतिभा और प्रगति समाज के लिए आवश्यक है। परंतु आधुनिकता के नाम पर समाज को दूषित करने का कोई अधिकार नारी को नहीं है। नारी को सभी रिश्तों का सम्मान रखते हुए आगे बढ़ना है ना कि रिश्तों को तोड़कर परिवार से अलग होकर अधुनिकता को अपनाना है। वैसे भी नारी का दर्जा समाज को सम्मान दिलाने के लिए है समाज को परिवार की तरह जोड़कर रखने का है, ना कि तोड़ने का।

श्राबणी, +3 द्वितीय वर्ष

कन्यादान

जाओ, में नहीं मानता इसे,
क्योंकी मेरी बेटी कोई वस्तु नहीं,
जिसको दान में दे दूं,
मैं बांधता हूं बेटी तुम्हें एक पवित्र बंधन में,
जिसे पति के साथ मिलकर निभाना तुम,
मैं तुम्हें अलविदा नहीं कह रहा,
आज से तुम्हारे दो घर हैं,
जब जी चाहे आना तुम,
जहां जा रही हो,
खूब प्यार बरसाना तुम,
सबको अपना बनाना तुम,
पर कभी भी,
न मर मर के जीना तुम,
तुम अन्नपूर्णा, शक्ति, लक्ष्मी हो तुम,
ज़िन्दगी को भरपूर जीना तुम,
न तुम बेचारी, न अबला,
खुद को असहाय कभी ना समझना तुम,
मैं दान नहीं कर रहा तुम्हें,
मोहब्बत के और एक बंधन में बांध रहा हूं तुम्हें,
उसे बखूबी निभाना तुम....

शरीफा शरवारी, +3 तृतीय वर्ष

गीताश्री पत्रकार एवं साहित्यकार हैं। कहानी, कविता, लेख इनकी प्रमुख विधाएँ हैं। लाइव इण्डिया वेबसाइट की सम्पादक गीताश्री आउट लुक पत्रिका की सहायक सम्पादक तथा **बिंदिया** पत्रिका की सम्पादक रही हैं। गीताश्री का जन्म 31 दिसम्बर 1965 ई० में मुजफ्फरपुर, बिहार में हुआ।

कहानी संग्रह : प्रार्थना के बाहर और अन्य कहानियाँ, 'स्वप्न, साजिश और स्त्री', डाउनलोड होते हैं सपने, लेडीज़ सर्कल

उपन्यास : हसीनाबाद

स्त्री विमर्श : स्त्री आकांक्षा के मानचित्र, औरत की बोली

शोध : सपनों की मंडी (आदिवासी लड़कियों की तस्करी पर आधारित), देहराग (बैगा आदिवासियों की गोदना कला पर एक सचित्र शोध पुस्तक)

संपादन : नागपाश में स्त्री (स्त्री-विमर्श), कथा रंगपूर्वी, स्त्री को पुकारता है स्वप्न (कहानी संग्रह), 23 लेखिकाएँ और राजेंद्र यादव (व्यक्तित्व), कल के कलमकार (बाल कहानी संग्रह), हिंदी सिनेमा : दुनिया से अलग दुनिया

सम्मान

रामनाथ गोयनका पुरस्कार, ग्रासरूट बेस्ट फीचर अवार्ड, मातृश्री अवार्ड, राष्ट्रीय कला समीक्षा सम्मान (अभिनव रंगमंडल), यूएनएफपीए-लाडली मीडिया अवार्ड, नेशनल फाउंडेशन फॉर इंडिया मीडिया फेलोशिप, इनफोचेंज मीडिया फेलोशिप, आधी आबादी वीमेन अचीवर्स अवार्ड, एस.राधाकृष्णन स्मृति राष्ट्रीय मीडिया सम्मान, अंतरराष्ट्रीय सृजन गाथा सम्मान (थाईलैंड), भारतेंदु हरिश्चंद्र पुरस्कार (भारत सरकार), इला त्रिवेणी सम्मान, बिहार गौरव सम्मान, सीनियर फेलोशिप (2016-2017, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार)

औरंगजेब की आखिरी

औरंगजेब की आखिरी रात नाटक के लेखक रामकुमार वर्मा हैं। बीजापुर और गोलकुंडा की शिया रियासतों पर विजय प्राप्त करके औरंगजेब ने मराठों का अंत करने का निश्चय किया तो उसे अपनी असफलता स्पष्ट दिखने लगी। सन् 1706 में औरंगजेब के राज्य की आर्थिक दशा भी चिंताजनक हो रही है। उसने देखा कि उसकी सेना अब अत्यंत विश्रृंखलित और आलसी हो गई है। 89 वर्ष की उम्र में तबीयत खराब होने लगी है, उसका शरीर टूट चुका है, उसे ज्वर और खांसी भी हो रही है। इस समय वह एक साधारण से पलंग पर लेटा हुआ है। उसके दाहिनी ओर उसकी बेटी जीनत उन्नीसा बेगम बैठी हुई है। उसकी आयु 40 वर्ष के लगभग है। दोनों अब अहमदनगर के किले में हैं।

औरंगजेब अत्यंत महत्वाकांक्षी है, धार्मिक असहिष्णु है, क्रूर है साथ में इस नाटक में औरंगजेब ने काफ़ी सारे पश्चाताप किए। उसे किसी पर विश्वास न था और उसके मन में अहंभाव और द्वंद्व भरा पड़ा है। जिस कमरे में रहता था उस कमरा में कोई विशेष सजावट नहीं है, किंतु सारे वायुमंडल में एक पवित्रता है। पलंग के सिरहाने दो शमादान जल रही हैं। दूसरी ओर केवल एक है, जिससे आलमगीर की आंखों में चकाचौंध ना हो। पलंग की दाहिनी ओर

जीनत की पीठिका के पास ही एक बड़ी खिड़की है, जिससे हवा का झोंका आ रहा है। उससे बड़े अंधकार के बीच में आकाश के तारे दिखाई पड़ रहे हैं। आलमगीर के सामने कोने की ओर एक सोने के पिंजरे में एक पक्षी बैठा हुआ है जो कभी-कभी अपने पंख फड़फड़ा देता है। पलंग से कुछ हटकर सिरहाने की ओर एक तिपाई है जिस पर दवा की शीशियाँ रखी हुई हैं। उसके समीप एक ऊँचे और लंबे मुँह वाली सोने की सुराही है, जिसमें गुलाब जल रखा हुआ है। उसके पास ही सोने का प्याला रेशम के कपड़े से ढ़का हुआ है।

आलमगीर जो कि मुगल साम्राज्य का बादशाह है और पूरे देश पर शासन करता था, भले ही आलमगीर शरीर से अस्वस्थ था परंतु मन से बलवान था। अपनी इस अवस्था में भी वह कहता था कि कमजोरी और बुढ़ापे ने हमें बेबस कर दिया है। हमारे बहुत से काम अधूरे पड़े हैं। दृढ़ मन से आलमगीर कहता है कि - "ओफ़ अगर हमारी जिंदगी के दिन अभी खत्म न होते, हम एक बार फिर शमशीर लेकर मैदान-ए-जंग में जाते, बागियों से कहते कम्बख्तों आलमगीर कमजोर नहीं है। उसकी तलवार में अब भी चिंगारियां है। घुटने टेककर गुनाहों की माफी मांगो। औरंगजेब एक महत्वाकांक्षी राजा है। 89 आयु में शरीर में बल नहीं है तो क्या हुआ लेकिन तलवार में बल है।

वह धार्मिक असहिष्णु है। अपने शासनकाल में उसने इस्लाम के नाम पर बहुत पाप किया है। हिंदुओं को जबरदस्त इस्लाम कुबूल करवाने में तुला था। जो इस्लाम कुबूल करता था उसके लिए कोई कर नहीं लगता था। इस्लाम और हिंदुओं के बीच फर्क करता था। आलमगीर बहुत ही क्रूर है। उसमें दया प्रेम की कोई भी भावना न थी। अपने सगे भाई तक को उसने नहीं छोड़ा। दारा का सर कलम कर दिया और शुजा और मुराद का कत्ल कर अपने पिता को कैद कर लिया और अपने तीनों बेटों को नजरबंद कर दिया। वह बहुत ही अत्याचारी है। न जाने कितने हिंदुओं को हाथी के पैरों तले कुचलवा दिया। छत्रपति शिवाजी के पुत्र संभाजी और उनके परिवार को बंदी कर लिया था और उन पर जोर जबरदस्त इस्लाम कुबूल करवाने में तुला था, परंतु उन्होंने धर्म परिवर्तन नहीं किया और अंत में औरंगजेब ने बड़ी बेरहमी से उनका कत्ल कर दिया। औरंगजेब को किसी पर भरोसा न था अपने अंतिम सांस तक सिर्फ और सिर्फ पश्चाताप ही किया अपने बेटी जीनत से कहता था कि - “जब हम पैदा हुए थे तब हमारे चारों तरफ हजारों लोग थे लेकिन लेकिन इस वक्त हम अकेले जा रहे हैं, और हमारे पास कोई भी नहीं है।“ अंत में "अल्लाह हो अकबर" की ध्वनि में अज़ान होती है आलमगीर ध्यान से सुनता है, उसके होठों में कुछ स्पंदन होता है सर एक झटके के साथ सिर उठाकर अजान आने के दिशा में नेपथ्य की ओर देखता है। अल्लाह.....हो.....अक.....अकबर का अंतिम अंश "बर "होठों में ही रह जाता है, और तकिए पर आलमगीर का सिर झटके से गिर पड़ता है, और आलमगीर की मृत्यु हो जाती है।

प्रज्ञा, +3 तृतीय वर्ष

मल्लिका

आषाढ़ का एक दिन प्रसिद्ध कवि कालिदास के जीवन संबंधित नाटक है। इस नाटक में मोहन राकेश जी ने कालिदास के एक कवि के रूप में प्रसिद्ध होने के पूर्व की घटनाओं को लिखते हैं। जिसमें मोहन राकेश जी का ध्यान कालिदास की प्रेमिका मल्लिका के ऊपर अधिक केंद्रित है। मल्लिका का त्याग, प्रेम, निस्वार्थ परता की भावना पर इस नाटक में मोहन राकेश जी ने विशेष प्रकाश डाला है।

मल्लिका एक छोटे से गांव में रहने वाली एक सीधी-सादी युवती थी। नाटक के प्रथम भाग में हम देखते हैं कि मल्लिका कालिदास के साथ बारिश में भीग कर अपने घर आती है। तब उसकी माता कालिदास और मल्लिका के संबंध को लेकर कई सारी बातें करती है। अंबिका व्यवहारकुशल है। वह मानव मनोभावों से यथेष्ट परिचित है, इसीलिये वह कहती है कि समाज इस संबंध को लेकर क्या कहेगा? परंतु मल्लिका को इस बात की जरा सी भी परवाह नहीं थी। जब उसकी माता अंबिका कालिदास की बुराई करती है तब मल्लिका को यह अच्छा नहीं लगता है और वह दुःखी हो जाती है, पर कालिदास का साथ नहीं छोड़ती है। इससे स्पष्ट होता है कि मल्लिका सहृदय और स्वभाव से जिद्दी थी।

नाटक में हम देखते हैं कि जब कालिदास अपने गाँव में थे उनकी कवि प्रतिभा को कोई भी समझ नहीं रहा था, जो मल्लिका की व्यथा का कारण थी। वह चाहती है कि कालिदास को उसकी प्रतिभा का यथोचित सम्मान मिले। मल्लिका की माता अंबिका उससे विवाह की बात करती थी। तब मल्लिका विवाह से इनकार कर देती है, क्योंकि मल्लिका कालिदास की प्रगति एवं साहित्य साधना में बाधा नहीं बनना चाहती थी। मल्लिका के जीवन में सिर्फ और सिर्फ कालिदास के लिये स्थान था। मल्लिका के इस त्याग की सबसे बड़ी वजह थी कालिदास के प्रति उसके हृदय में प्रेम का भाव।

जब उज्जयिनी से कालिदास के लिए राज कवि का सम्मान का प्रस्ताव आया तब कालिदास ने अस्वीकार कर दिया। परंतु मल्लिका के निवेदन से वे उज्जयिनी गए। मल्लिका

चाहती थी कि कालिदास अपने साहित्य साधना करें और अपनी ख्याति का विस्तार करें, वह कवि के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त करें। यह बात कालिदास को समझाकर मल्लिका ने कालिदास को उज्जयिनी भेज दिया। इस तरह स्पष्ट रूप से दिखाई देता है की मल्लिका एक आदर्श प्रेमिका थी, जो अपने बारे में न सोच कर कालिदास के अच्छे भविष्य के बारे में सोचती है। इस प्रकार वह एक आदर्श प्रेमिका थी।

कालिदास उज्जयिनी जाकर वहाँ राजकन्या प्रियंगुमंजरी से विवाह कर लेते हैं। परंतु मल्लिका ने अभी तक अपने जीवन में किसी को भी प्रवेश करने नहीं दिया। जब भी उसकी माता उससे विवाह की बात करती वह उसे टाल देती थी। कालिदास के विवाह की बात सुनकर भी मल्लिका विचलित नहीं हुई। जब प्रियंगुमंजरी मल्लिका को अपने साथ चलने के लिए कहती है तब मल्लिका इन्कार कर देती है। जब उसकी घर की मरम्मत के लिए भी प्रियंगुमंजरी उसे कहती है, पर स्वाभिमानी मल्लिका इस बात को ग्रहण भी ग्रहण नहीं करती क्योंकि मल्लिका।

जब कालिदास उज्जयिनी के राजकवि का सम्मान प्राप्त करने के लिए उज्जयिनी जा रहे थे तब मल्लिका चाहती थी तो कालिदास से विवाह कर उसके साथ उज्जयिनी जा सकती थी, परंतु मल्लिका ने ऐसा नहीं किया क्योंकि वह प्रेम में स्वार्थ को नहीं रखना चाहती थी। वह कालिदास की नजर में एक स्वार्थपर प्रेमिका नहीं होना चाहती थी।

मल्लिका कालिदास के लिए अपने जीवन के सारे सुख को त्याग देती है। वह सदैव कालिदास का उत्कर्ष चाहती थी और इसलिए वह अपने मन के प्रेम भाव यानी कालिदास को उज्जयिनी भेज देती है। उसके मन में सदैव कालिदास के प्रति समर्पण का भाव रहा है। जब उसे मालूम हुआ कि कालिदास अपने कवि का परिचय छोड़कर शासन भार संभालने लगे तब मल्लिका को लगा कि उसने कालिदास को जिस वजह से अपने से दूर भेजा था वह निरर्थक हो रहा है। उसका मन विचलित हो जाता है।

पर जब कालिदास कश्मीर के शासकीय पद से विरक्त हो जाने का समाचार सुन मल्लिका का मन फिर से विचलित हो गया। मल्लिका के हृदय में कालिदास के लिए सम्मान और प्रेम की भावना थी। परंतु माता की मृत्यु और परिस्थितियों की विवशता उसे विलोम के समक्ष आत्मसमर्पण करने के लिए विवश कर देती है। विलोम से उसे एक पुत्री हुई। जब कालिदास कश्मीर से पलायन करके आता है तब मल्लिका उसका स्वागत करती है परंतु कालिदास विलोम और विलोम से उत्पन्न बच्चे को देखकर लौट जाते हैं।

इस प्रकार मल्लिका का जीवन दुःख से घिर जाता है। इस प्रकार मल्लिका त्याग, स्वाभिमान, निःस्वार्थपरता की भावना एवं स्त्री के आदर्श लिये सामने आती है।

मामानी रेड्डी,
तृतीय वर्ष

तअपोई

एक गांव में तनयवन्त नामक एक सज्जन व्यक्ति रहते थे। वे बहुत धनी थे। उन्हें कभी भी धन की कोई कमी न थी। उनके सात पुत्र और एक पुत्री थी। पुत्री का नाम था तअपोई। सात भाईयों में एक ही बहन होने के कारण वह सब की आँखों की तारा थी। उसके सात भाईयों की सात पत्नियां भी थी। तअपोई को कभी भी किसी भी चीज की कमी नहीं थी। उसके मांगने से पहले ही उसकी सारी जरूरतें पूरी हो जाती थी। एक दिन उसकी पिता की मृत्यु हो गई और पिता की मृत्यु के कुछ ही दिनों बाद माता की भी मृत्यु हो गई। लेकिन उसके भाई और भाभियों ने उसे इस बात की कमी कभी महसूस होने नहीं दिया। ऐसे ही कुछ दिन बीत गये। फिर सातों भाइयों को व्यापार करने दूर देश जाना पड़ा। सभी भाई अपनी पत्नियों से कह गए कि तअपोई का अच्छे से ध्यान रखना। उसे कभी किसी चीज़ की कमी नहीं होनी चाहिए। यह कहकर सातों भाइयों ने विदा लिया।

तअपोई के भाईयों ने जैसा कहा था उनकी सारी पत्नियों ने तअपोई का बिलकुल वैसा ही ध्यान रखा। एक बार तअपोई झूला झूल रही थी और उसकी सारी भाभियाँ उसकी सेवा कर रही थी। एक विधवा ब्राह्मणी ने यह देख कर कहा तुम सब अपनी शत्रु की सेवा कर रही हो। ननन्द हमेशा शत्रु ही होती है। जल्दी कोई उपाय करो वरना बाद में पछताओगे। यह बात सबको सही लगी। धीरे धीरे सभी बहुओं ने उसे कड़वे वचन बोलने लगी और जंगल में उसे बकरी चराने भेजने लगी। वो हर दिन बकरियों को लेकर जंगल में चराने जाती। तअपोई को खाने के लिए थोड़ा सा चावल और मिट्टी भर कर देते थे। नमक के नाम पर जले हुए अंगारे देते थे। घर की

छोटी बहू तअपोई की प्रिय थी। जब वह खाना देती तो ढ़ेर सारे चावल और स्वादिष्ट पकवान भी देती और उस दिन तअपोई मन भर के खाती थी।

एक बार उसकी एक बकरी जिसका नाम घरमणि था, वो जंगल में कहीं खो गई। तअपोई की बड़ी भाभी ने कहा जब तक तू घरमणि को नहीं ढूंढ लेगी तुझे खाने को कुछ भी नहीं दिया जायेगा। तअपोई रो रो कर घने अंधेरे जंगल में घरमणि को ढूंढने लगी। तब उसने देखा कि एक जगह पर कुछ लड़कियां मिल कर देवी माँ की पूजा कर रही थी। वह भी जा कर वहां बैठी और मन में देवी माँ का स्मरण किया। पूजा खतम होने के बाद लड़कियों ने उसे कुछ फल प्रसाद के रूप में दिये। अगले दिन सुबह उसे घरमणि मिल गई और वो उसे लेकर घर गयी।

ऐसे ही दस साल बीत गये। फिर तअपोई के सभी भाई व्यपार करके गांव लौटे। लौटते समय गांव की जंगल में उन्हें किसी की रोने की आवाज़ सुनाई दी। बड़े भाई की आज्ञा पा कर छोटा भाई देखने के लिए गया और वहां जाकर देखा कि तअपोई रो रही है। उसके बालों में तेल नहीं है, फटे हुए कपड़े पहने है और अपने भाईयों को याद करके अपने भाग्य को कोस रही है। सभी भाई अपनी प्यारी बहन को ऐसी हालत में देख कर व्याकुल हो उठे और उसे पूछा कि तेरी ऐसी दशा किसने की है। तअपोई ने जब अपने भाईयों को देखा तो उसे ऐसा लगा कि मानो उसे पूरी दुनिया की खुशीयाँ मिल गई। तअपोई ने अपनी भाईयों को सब सच सच बता दिया। सारी बातें सुनकर सारे भाई क्रोधित हो गए और कहा तुझे जो भाभी पसंद नहीं हम उसकी नासिका छेदन कर देंगे। गांव में खबर कर दी गई कि साधव व्यापार करके लौट आये। यह सुनकर सातों बहुयें आरती उतारने गई। बहुओं को देख कर उनके पतियों ने पूछा कि तअपोई कहाँ है? तो बड़ी बहू ने कहा उसे ज्वर है इसीलिए वो नहीं आयी। यह सुनकर सभी भाई और भी ज्यादा क्रोधित हो गए एवं छोटी बहू को छोड़कर बाकी सब बहुओं की नासिक छेदन कर दिया गया। अनेक दुःख कष्ट के पश्चात अंत में तअपोई के जीवन में खुशियां आई। कुछ दिन के बाद एक गुणवान लड़के के साथ उसकी शादी हो गई।

यह तअपोई की कहानी है। तअपोई को देवी माँ का रूप कहा जाता है। ओड़िशा में हर साल भाद्रव महीने में जितने भी रविवार होते हैं उसमें सारी लड़कियाँ खुदुरुकुणी ओशा करती है। यह ओशा बहन अपनी भाई के लिए करती है, जिसका आधार तअपोई की कथा है।

पुष्पा साहू,
+3 तृतीय वर्ष

समय

समय! ये जो शब्द है ये शब्द हमारे जीवन का सबसे मूल्यवान शब्द है। हर इंसान को समय के हिसाब से काम करना चाहिए क्योंकि समय अनमोल है। समय ही हमारे जीवन की एकमात्र ऐसी चीज है, जो कि सीमित है। जो समय के महत्व को नहीं समझ पाता, वह कभी भी अपने जीवन को सफल नहीं बना सकता है। समय की कीमत धन से बहुत अधिक होती है। धन आज है कल नष्ट हो जाएगा, परसों वापस आ जाएगा लेकिन एक बार समय अतीत के गर्त में समा जाता है तो वह चाहकर भी वापस नहीं आता।

स्वामी विवेकानंद कहते है,

"एक समय में एक काम करो और ऐसा करते समय अपनी पूरी आत्मा उसमें डाल दो और बाकी सब कुछ भूल जाओ"

कबीरदास के अनुसार,

“काल करे सो आज कर, आज करे सौ अब।
पल में प्रलय होगी, बहुरि करेगी कब।।"

इस दोहे का मतलब है, जो कल करना है उसे आज करो और जो आज करना है उसे अभी करो कुछ ही समय में जीवन खत्म हो जाएगा फिर तुम क्या कर पाओगे। यानी समय हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण होता है और समय में किया काम उतना ही जीवन को आसन बना देता है।

विद्यार्थियों के लिए समय बहुत कीमती होता है। समय रहते पढ़ेंगे-लिखेंगे नहीं तो वो कुछ हासिल नहीं कर पाएंगे। विद्यार्थियों का मानना है कि परीक्षा में तो अभी काफ़ी दिन बाकी है, कल से पढ़ना शुरू कर देंगे ऐसा सोचकर कुछ विद्यार्थी कभी नहीं पढ़ते, किंतु परीक्षा समय पर ही होती है। परीक्षा के प्रश्न को देखकर उन्हें लगता है कि यदि उन्होंने समय का सदुपयोग किया होता तो परीक्षा हॉल में यूँ ही खाली नहीं बैठना पड़ता।

अंग्रेजी में कहा गया है - Time and tide waits for none अर्थात समय किसी केलिए नहीं रुकता।

समय के सदुपयोग में ही जीवन की सफलता का रहस्य निहित है। राजा हो या रंक, मूर्ख हो या पंडित, समय किसी के लिए नहीं रुकता। इसलिए सब को सफलता हासिल करने के लिए समय का सदुपयोग करना ही पड़ता है।

सस्मिता नायक,
+3 द्वितीय वर्ष

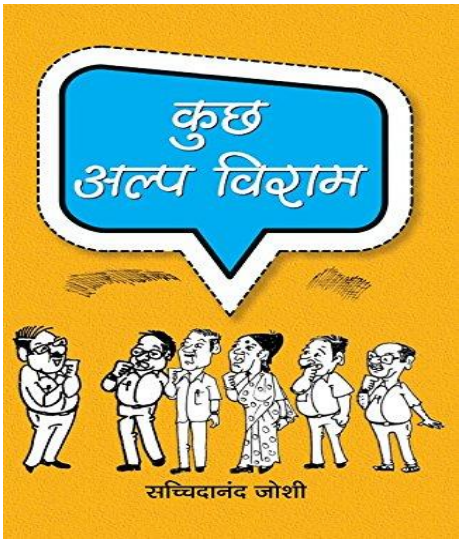

पुस्तक समीक्षा
पुस्तक का नाम - कुछ अल्प विराम
लेखक - सचिदानंद जोशी
प्रकाशन का नाम ,प्रकाशन स्थल - प्रभात पेपरबेक्स 4/19 आसफ अली रोड ,नई दिल्ली -110002
पुस्तक मूल्य -150.00

पुस्तक का सारांश -

कुछ अल्प विराम पुस्तक में बहुत सारी कहानी हैं जो छोटी छोटी हैं। लेकिन उन छोटी कहानी में बहुत कुछ सीख मिलती है। लेखक जी ने कुल मिला कर 24 छोटी कहानियाँ लिखी हैं । जिसमें जीवन के छोटे छोटे अनुभव बड़े सुंदर तरीके से अभिव्यक्त हुये हैं, जो कुछ न कुछ सीख देते हैं। इसमें जीवन के उन सभी छोटे बड़े प्रसंगों को इकठ्ठा करने की कोशिश की गई है, जो हँसाते हैं, रुलाते हैं, हल्की सी चपत लगते हैं और कभी चिकोटी भी काट लेते हैं। जरूरी नहीं कि जिंदगी का हर सबक, हर समय किसी भारी भरकम शास्त्रीय किताब से ही मिले, जिंदगी के छोटे से प्रसंग भी कई बार बड़ा सबक सीखा जाते हैं। इस पुस्तक में कुछ ऐसी कहानियाँ हैं जो बहुत बड़े सबक सिखाते हैं जैसे - कोई भी काम छोटा या बड़ा नहीं होता काम तो काम है, किस तरह एक पिता की उम्मीद अपनी बेटी से होती है और पिता कितनी मेहनत से अपनी बच्ची को पढ़ने अमेरिका भेजते हैं लेकिन वो वहां बिना बताए शादी कर लेती है तो घर से रिश्ता टूट जाता है, लेकिन जब उसे पता चलता है कि उसके पापा बीमार हैं लेकिन किसी को बिना बताए ही वो हॉस्पिटल का बिल खुद देती है। ऐसे ही 24 कहानियाँ बहुत ही अच्छी हैं और उससे हमको कुछ न कुछ सिख जरूर मिलती है।

निष्कर्ष -

मैंने जब इस पुस्तक को पढ़ा तो मुझे बहुत अच्छा लगा। सब कहानी छोटी छोटी है लेकिन बहुत मजेदार है। जरूरी नहीं कि शास्त्रीय किताबों से या बड़ी बड़ी कहानी से हमें कुछ सीख मिले कभी कभी छोटी कहानी से भी हमें बहुत बड़ी सिख मिलती है। मेरी सलाह यह है कि यह पुस्तक सभी पढ़ें। पढ़ते वक्त बहुत अच्छा लगेगा और दिलचस्पी भी बढ़ेगी। धन्यवाद ।

हाफिज़ा, +3 तृतीय वर्ष

आपकी बात

हिंदी भारती हम जैसे छात्रियों केलिए एक माध्यम है जिसके माध्यम से हम अपनी लेखन प्रातिभा को जान सकते हैं। हिंदी भाषा और साहित्य के क्षेत्र में कुछ हासिल करने केलिए हिंदी भारती हमारी पहली सीढ़ी है, जिसको सहारा बनाकर हम अपने जीवन को सफल बना सकते हैं। इसके माध्यम से हमको अलग अलग संस्कृति को जानने एवं समझने की मौका मिलता है।

श्राबनी महान्ति
+3 द्वितीय वर्ष

हम अब न तो विभाग की छात्रा रहीं हैं और न ही कमला नेहरू महिला महाविद्यालय की। जीवन की चलती यात्रा में हर वक्त कुछ नया दायित्व नई कर्तव्य का बोध होता रहता है। इस व्यस्त जीवन में मनोरंजन का साधन बन जाता है हिंदी भारती। केवल मनोरंजन ही नहीं कुछ शिक्षा कुछ जानकारी भी प्राप्त होती है। केवल पढ़ना नहीं होता बल्कि अपने लेख के माध्यम से अपने सपनों को साकार करने का अवसर भी मिलता है। मैं धन्यवाद करती हूं हिंदी भारती का और हमेशा इसके साथ जुड़े रहने का प्रयास भी करती रहूंगी।

धन्यवाद
पिंकी सिंह, भूतपूर्व छात्रा
हिंदी विभाग, कमला नेहरू महिला महाविद्यालय

ललित कुमार

विटामिन ज़िंदगी

https://youtu.be/9HGnjzVu-aE

यादों के गलियारों से

डॉ. कमलिनी पाणिग्राही

नई छात्राओं का स्वागत

लेखक ललित कुमार

लेखक डॉ. अनिर्बान गांगुली

लेखिका डॉ. प्रतिभा सतपथी

धन्यवाद